पत्रिका

गोबर नहीं, अब ऊन और मूंगफली के छिलकों से समृद्ध बनेगी फसल

प्याज की पैदावार में 72% तक इजाफा, मृदा की गुणवत्ता में भी सुधार

पत्रिका न्यूज नेटवर्क
patrika.com

बीकानेर. रासायनिक उर्वरकों के बढ़ते दुष्प्रभावों और मृदा की गिरती गुणवत्ता के बीच एक नई तकनीक ने उम्मीद जगाई है। स्वामी केशवानंद राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय (एसकेआरएयू) के कृषि अनुसंधान केंद्र, बीछवाल के दो वर्षों से किए जा रहे अनुसंधान में पाया गया है कि मूंगफली के छिलके और ऊन अपशिष्टों से तैयार खाद के उपयोग से प्याज की पैदावार में गोबर खाद की तुलना में 72 प्रतिशत तक की वृद्धि दर्ज की गई है।

मूंगफली के छिलके से तैयार खाद का प्रयोग, गोबर खाद की तुलना में 72 प्रतिशत की तक बढ़ोतरी।

अधिकारिक जानकारी के अनुसार, बीकानेर जिले की करीब 245 ऊन प्रोसेसिंग इकाइयों से सालाना 8,400 टन ऊन अपशिष्ट और मूंगफली उद्योग से करीब 4.83 लाख टन छिलके निकलते हैं। कुलपति डॉ. अरुण कुमार ने बताया कि इन अपशिष्टों को वैज्ञानिक विधियों से खाद में बदल कर, न केवल पर्यावरण प्रदूषण पर नियंत्रण पाया जा सकता है, बल्कि खेती की लागत भी घटाई जा सकती है।

और भी फायदे

प्राकृतिक खेती को बढ़ावा मिलेगा। अस्थमा, एलर्जी, सांस की बीमारियों का खतरा भी कम होगा। इसे अपनाने से रासायनिक उर्वरकों में लगने वाले खर्च में भी कमी आएगी। इससे किसानों की आय में बढ़ोत्तरी का स्रोत खुलेगा।

मृदा में सुधार

228.98 क्विंटल/हेक्टेयर गोबर खाद से उत्पादन
395.10 क्विंटल/हेक्टेयर मूंगफली-ऊन खाद से उत्पादन
72.57% उत्पादन में वृद्धि
14.22% जैविक कार्बन में सुधार
8.12- 7.99 मृदा पीएच सुधार
कचरे का उपयोग
8,400 टन/वर्ष ऊन अपशिष्ट
4.83 लाख टन/वर्ष मूंगफली के छिलके

जैविक खेती की दिशा में लाभदायक कदम

कुलसचिव देवाराम सैनी ने बताया कि यह अनुसंधान राष्ट्रीय कृषि विकास योजना के अंतर्गत किया गया। जैविक खेती में रुचि रखने वाले किसानों के लिए यह तकनीक न केवल पैदावार बढ़ाने वाली साबित हो सकती है, बल्कि मृदा की गुणवत्ता बनाए रखने में भी सहायक है। इस नवाचार को किसानों तक पहुंचाने के लिए प्रशिक्षण शिविरों में हैंड्स-ऑन ट्रेनिंग दी जा रही है, ताकि वे इसे व्यवहार में अपनाकर अपनी आय और उपज दोनों में सुधार कर सकें।

क्या करें?

मूंगफली के छिलके और ऊन के बचे हुए अपशिष्ट को मिलाकर खाद बनाएं इस खाद का उपयोग प्याज, सब्जी या दूसरी फसलों में करें

क्यों करें?

पैदावार 70% तक बढ़ सकती है
खेत की मिट्टी की सेहत सुधरती है
रासायनिक खाद की जरूरत कम होती है

कैसे करें?

- कृषि अनुसंधान केंद्र बीछवाल की ओर से विकसित विधि अपनाएं
- नजदीकी कृषि प्रशिक्षण केंद्र से संपर्क करें
- शाला-दर्पण या विभागीय वेबसाइट से गाइडलाइन डाउनलोड करें